International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(6): 215-217

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(6): 215-217
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 01-09-2021
Accepted: 03-10-2021

डॉ. अर्चना पाल
एसो० प्रोफेसर एवं अध्यक्षा संस्कृत विभाग आर.सी.ए. गर्ल्स (पी.जी.) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अर्चना पाल
एसो० प्रोफेसर एवं अध्यक्षा संस्कृत विभाग आर.सी.ए. गर्ल्स (पी.जी.) कॉलेज, मथुरा, उत्तर प्रदेश, भारत

कादम्बरी के शुकनासोपदेश में प्रतिपादित राजलक्ष्मी विषयक वर्णन की वर्तमान में प्रासंगिकता

डॉ. अर्चना पाल

सारांश
संस्कृत साहित्य निःसन्देह अमूल्य एवं अनुपम है और उसके अनुशीलन से हमें उसकी प्रासंगिकता आज भी स्पष्टतः परिलक्षित होती है। मानवोचित सबलताओं एवं दुर्बलताओं का ज्ञान प्राप्त करके हम निश्चित रूप सुधारवादी दृष्टिकोण को अपनाकर स्वयं, समाज एवं देश में सुधार ला सकते हैं। बाणभट्ट द्वारा रचित 'कादम्बरी' के 'शुकनासोपदेश' में यथार्थवादी शैली के द्वारा राजा चन्द्रापीड को युवराज पद पर अभिषेक से पूर्व वृद्ध मन्त्री शुकनास के द्वारा दिया गया उपदेश उनके व्यापक ज्ञान की अभिव्यक्ति करता है और देशकालातीत आदर्श को हम सभी के सामने प्रस्तुत करता है।

कूटशब्दः कादम्बरी के शुकनासोपदेश, प्रतिपादित राजलक्ष्मी, सुधारवादी दृष्टिकोण

प्रस्तावना
बाणभट्ट रचित 'कादम्बरी' के 'शुकनासोपदेश' में राजलक्ष्मी विषयक वर्णन यथार्थवाद की सफल अभिव्यक्ति है। काल्पनिक कथावस्तु पर आधारित इस रचना में राजलक्ष्मी प्राप्त हो जाने पर राजा में किस–किस प्रकार के दुर्गुण आ जाते हैं, इसका वृह्द एवं वास्तविक वर्णन किया गया है। शुकनासोपदेश में अनुभवी, बुद्धिमान एवं दूरदर्शी मन्त्री शुकसास राजा चन्द्रापीड को, जिसने युवावस्था में राजलक्ष्मी को प्राप्त किया है, को उपदेश देते हुये कहते हैं कि राजलक्ष्मी प्राप्त हो जाने पर किस–किस प्रकार के दुराचार राजा को घेर लेते हैं और किस प्रकार से चापलूस लोगों के द्वारा राजाओं को अपने जाल में फंसा लिया जाता है।
राजऐश्वर्य के कारण राजा लोग सही एवं गलत को भी नहीं देख पाते हैं जिस प्रकार से नेत्रहीन व्यक्ति कुछ भी नहीं देख पाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में बाणभट्ट ने उल्लेख किया है कि –

> ''कष्टमनञ्जनवार्तसाध्यमपरमैश्वर्यतिमिरान्धत्वम्।''
> कादम्बरी शुकनासोपदेश

अर्थात्
''ऐश्वर्य रूपी तिमिर रोग से उत्पन्न अंधापन दूसरे ही प्रकार का होता है, जो कष्टदायक तथा सुरमे की सलाई से भी ठीक नहीं किया जा सकता है।''

इसी प्रकार से – ''अशीशिरोपचारहार्योतितीव्रोदर्पदाहज्वरोष्मा''

अर्थात्
''अभिमाम रूपी दाहक ज्वर की गर्मी अत्यन्त तीक्ष्ण होती है जो शीतल उपचारों से भी दूर नहीं की जा सकती है।''

अन्यत्र – ''अजस्रमक्षपावसानप्रबोधा घोरा च राज्य सुखसन्निपात निद्रा भवतीति''।

अर्थात्
''राज्यसुख संयोगरूपी निद्रा ऐसी गहरी होती है, जिसमें कभी रात्रि की समाप्ति पर जागरण नहीं होता।''

बाणभट्ट द्वारा राजाओं की प्रवृत्ति का वर्णन निःसन्देह कालातीत है। वर्तमान में भी किसी भी राजनीतिक दल की सरकार आने पर सत्ता के मद में मदमस्त लोगों को सही और गलत के उपदेश देने वाले बहुत कम होते हैं। शुकनासोपदेश में वर्णित है –

''विशेषेण राज्ञाम्। विरला हि तेषामुपदेष्टारः।''

अर्थात्
''विशेष रूप से राजाओं के लिये उपदेश देने वाले बहुत कम होते हैं।''
जनमानस की एक अन्य प्रवृत्ति का भी उल्लेख किया गया है कि राजा के भय के कारण लोग कुछ भी कहने से डरते हैं और राजा की आज्ञा का प्रतिध्वनि के समान अनुसरण करते हैं –

''प्रतिशब्दक इव राजवचनमनुगच्छति जनोभयात्।''

अर्थात्
''प्रतिध्वनि की भांति लोग भय से राजाज्ञा का अनुसरण ही किया करते हैं।''
बाणभट्ट ने राजा के स्वभाव की विवेचना करते हुये उल्लिखित किया है–
''अंहकारदाहज्वरमूर्च्छान्धकारिता विह्वला हि राजप्रकृतिः अलीकाभिमानोन्मादकारीणि धनानि। राजविषविकारतन्द्राप्रदा राजलक्ष्मीः।''

अर्थात्
''राजा का स्वभाव अंहकार रूपी तीव्र ज्वर से उत्पन्न अचेतना के कारण खोया–खोया सा चञ्चल रहता है, धन झूठा अभिमान तथा उन्माद पैदा करने वाले हैं। राजलक्ष्मी राज्यरूपी विष के विकार से आलस्य देने वाली है।''
बाणभट्ट ने राज्य अभिषेक के उपरान्त राजाओं में अनेक प्रकार के दुराचारों की निवास स्थानता का समर्थन करते हुये अत्यन्त सूक्ष्म तथ्यों को उद्घाटित किया है।

> ''अभिषेकसमय एवं चैतेषां मड.लकलशजलैरिव प्रक्षाल्यते दाक्षिण्यम्, अग्निकार्यधूमेनेव मलिनी क्रियते हृदयम्, पुरोहिताकुशाग्रसंमार्जिनीभिरिवापह्रियते क्षान्तिः, उष्णीय पट्टबन्धेनेवाञ्छाद्यते जरागमनसारणम्, आतपत्त्रमण्डले – नेवापसार्यते परलोकदर्शनम्, चामरपवनैरिवापह्रियते स सत्यवादिता, वेत्रदण्डैरिवोत्सार्यन्ते गुणाः जयशब्दकलकलरवैरिव तिरस्क्रियन्ते साधुवादाः।''
>
> कादम्बरी (शुकनासोपदेशः)

अर्थात्
''राज्याभिषेक के समय ही इनकी (राजाओं की) उदारता मानो, मड. ल कलशों से धो दी जाती है, यज्ञकर्म के धुएं से मानो हृदय मलिन कर दिया जाता है, पुरोहित की कुशाओं के अग्रभाग रूपी बुहारियों से मानो सहनशीलता दूर फेंक दी जाती है, पगडी के बाँधने से मानो बुढ़ापे के आगमन की स्मृति ढक दी जाती है, छत्रमण्डल से मानो परलोक दृष्टि रोक दी जाती है, बेंत की छडियों से मानो गुण हटा दिये जाते हैं। जय–जयकार के कोलाहल की ध्वनि से मानो अच्छे वचन तिरस्कृत कर दिये जाते हैं।''
उपर्युक्त राजा विषयक वर्णन के समान ही आज की अधिकांशतः लोकतान्त्रिक व्यवस्था में राजा स्वरूप मंत्री आदि उपर्युक्त दुर्गुणों को आत्मसात कर लेते हैं।
अन्यत्र भी बाण ने राजाओं की प्रवृत्ति को उल्लिखित करते हुये कहा है – मृषावादविषविपाक सञ्जातमुखरोगा इवातिकृच्छेण जलपन्ति अर्थात् असत्यभाषण रूपी विष के परिणाम स्वरूप मुखरोग उत्पन्न होने से मानो वे बडे कष्ट से बोल पाते हैं।''
वर्तमान में भी यही प्रवृत्ति परिलक्षित होती है सामान्य जनों से बात करना भी वर्तमान राजाओं (सत्तासीन मन्त्रियों) को कष्टप्रद लगता है। सत्ता के मद में मदमस्त लोग अपने सगे–सम्बन्धियों को भी भूल जाते हैं ऐसा ही बाणभट्ट ने भी उल्लेख किया है। ''आसन्नमृत्यव इव बन्धुजनमपि नाभिजानन्ति'' – अर्थात् '' मरणासन्न व्यक्तियों की भांति सगे सम्बन्धियों को भी (राजा लोग) नहीं पहचानते हैं।''
किसी के द्वारा दिये गये उपदेश को सत्तासीन लोग ग्रहण करना ही नहीं चाहते हैं, क्योंकि वे स्वयं को ही सर्वज्ञाता मानते हैं ऐसा ही शुकनासोपदेश में बाणभट्ट ने राजाओं के विषय में वर्णित किया है कि राजा लोग – ''दृष्टवारणा इव महामनस्तम्भ निश्चलीकृता न गृहन्त्युपदेशम् अर्थात्'' बहुत बडे खम्भे से जकडकर रखे गये दुष्ट हाथियों के समान महान गर्व के दुराग्रह से अविचल बने हुये राजा लोग उपदेश ग्रहण नहीं करते।''
सत्तासीन व्यक्तियों और राजाओं के व्यवहार की साम्यता अन्यत्र भी देखी जा सकती है। शुकनासोपदेश में बाणभट्ट ने राजाओं के व्यवहार को इंगित करते हुये लिखा है कि राजा –

> ''दर्शनप्रदानमप्यनुग्रहं गणयन्ति। दृष्टिपातमप्युपकार पक्षे स्थापयन्ति। सम्भाषणमपि संविभागमध्ये कुर्वन्ति। आज्ञामपि वरप्रदान मन्यन्ते। स्पर्शमपि पावनमाकलयन्ति।''
>
> कादम्बरी (शुकनासोपदेश)

अर्थात्
''(राजा लोग) दर्शन देना भी कृपा मानते हैं। किसी पर दृष्टि डालने को भी उपकार की श्रेणी में रखते हैं। बात करना भी पारितोषक देना समझते हैं। आज्ञा देने को भी वर देना मानते हैं। द्द देना भी पवित्र कर देना समझते हैं।''
वर्तमान में भी किसी भी राजनीतिक दल की सरकार आने पर सत्तासीन लोग व्यक्ति के गुणों और योग्यता को प्रमुखता न देकर अपितु चाटुकारिता जैसे गुणों के आधार पर उसे सम्मानित करते हैं। इसी प्रकार की राजाओं की प्रवृत्ति का उल्लेख बाणभट्ट ने भी किया है कि राजा –

> ''सर्वथा तमभिनन्दन्ति, तमालपन्ति, तं पार्श्वे कुर्वन्ति। तं संवर्धयन्ति सहसुखमवतिष्ठन्ते, तस्मै ददतिय तं मित्रतामुपजयन्ति तस्य वचनं श्रृण्वन्ति, तत्र वर्षन्ति, तं बहुमन्यन्ते, तमाप्तातामापादयन्तिय यौहर्निशम नवरतमुपरचिताञ्जलिरधिदैवतमिव विगतान्यकर्तव्यः स्तौति, यो वा माहात्यमुद्भावयति।''
>
> कादम्बरी (शुकनासोपदेशः)

अर्थात्
''हर प्रकार से उसका अभिनन्दन करते हैं, उससे बातें करते हैं, उसे बगल में बैठाते हैं, उसे बढ़ावा देते हैं, उसके साथ सुखपूर्वक बैठते हैं, उसे दान देते हैं, उसे मित्र बनाते हैं, उसका कहना सुनते हैं, उस पर बरसते हैं, उसे बहुत मानते हैं, उसे विश्वासपात्र बनाते हैं, जो दिन – रात निरन्तर हाथ जोड़कर अन्य कर्त्तव्यों को छोडकर देवता की भांति उनकी स्तुति करता है अथवा उनकी महिमा प्रकट करता है।''

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवरणों के द्वारा शुकनासोपदेश में प्रतिपादित राजलक्ष्मी विषयक वर्णन एवं वर्तमान लोकतान्त्रिक व्यवस्था की साम्यता पर विश्लेषण किया जा सकता है, परन्तु हमें अपनी लोकतान्त्रिक व्यवस्था को राजतन्त्र शासन नहीं बनने देना चाहिये क्योंकि प्रजातान्त्रिक शासन प्रणाली में जनमत की अभिव्यक्ति अत्यन्त आवश्यक है। हमारे भारत का जनतन्त्र विश्व के लिये एक आदर्श

है इसलिये हमारी लोकतान्त्रिक व्यवस्था शिथिल न हो, अपितु एवं शाश्वत बनी रहे इसके लिये हम सभी को प्रयासरत रहना चाहिये।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Makers of Indian literature Banabhatta – K. Krishnamoorthy साहित्य आकदमी।
2. कादम्बरी – डॉ० नर्मदेश्वर कुमार त्रिपाठी भारतीय विद्या संस्थान, वाराणसी।
3. कादम्बरी – डॉ० राधाबल्लभ त्रिपाठी राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली।
4. शुकनासोपदेश – आचार्य रामनाथ शर्मा, सुमन साहित्य भणडार, मेरठ।
5. शुकनासोपदेश – डॉ० एच०एन०यादव हरीश विश्वविद्यालय प्रकाशन, आगरा।